❍ 29 / 11 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *किसी को दुःख तो नहीं दिया ?*

➢➢ *पवित्र बनने का पुरुषार्थ किया ?*

➢➢ *मालिकपन की स्मृति से शक्तियों को आर्डर प्रमाण चलाया ?*

➢➢ *त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रह हर कर्म किया ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फरिश्ता वा अव्यक्त जीवन की विशेषता है - इच्छा मात्रम् अविद्या।* देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। *जब ब्राह्मण कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं तब किसी भी शुद्ध कर्म, व्यर्थ कर्म, विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में नहीं बंध सकते।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को स्वराज्य अधिकारी समझते हो? स्व का राज्य मिला है या मिलने वाला है? *स्वराज्य अर्थात् जब चाहो, जैसे चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा सको। कर्मेन्द्रिय-जीत अर्थात् स्वराज्य अधिकारी।* ऐसे अधिकारी बने हो या कभी-कभी कर्मेन्द्रियां आपको चलाती हैं? कभी मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते हो? कभी मन व्यर्थ संकल्प करता है या नहीं करता है? अगर कभी-कभी करता है तो उस समय स्वराज्य अधिकारी कहेंगे? राज्य बहुत बड़ी सत्ता है। राज्य सत्ता चाहे जो कर सकती है, जैसे चलाने चाहे वैसे चला सकती है।

〰✧ यह मन-बुद्धि-संस्कार आत्मा की शक्तियाँ हैं। आत्मा इन तीनों की मालिक है। यदि कभी संस्कार अपने तरफ खींच लें तो मालिक कहेंगे? तो स्वराज्य-सत्ता अर्थात् कर्मेन्द्रिय-जीत। जो कर्मेन्द्रिय-जीत है वही विश्व की राज्य-सत्ता प्राप्त कर सकता है। *स्वराज्य अधिकारी विश्व-राज्य अधिकारी बनता है। तो आप ब्राह्मण आत्माओंका ही स्लोगन है कि 'स्वराज्य ब्रह्मण जीवन का जन्म-सिद्ध अधिकार है।' स्वराज्य अधिकारी की स्थिति सदा मास्टर सर्वशक्तिवान है, कोई भी शक्ति की कमी नहीं।* स्वराज्य अधिकारी सदा धर्म अर्थात् धारणामूर्त भी होगा और राज्य अर्थात् शक्तिशाली भी होगा। अभी राज्य में हलचल क्यों है? क्योंकि धर्म-सत्ता अलग हो गई है और राज्य-सत्ता अलग हो गई है। तो लंगडा हो गया ना! एक सत्ता हई ना। इसलिए हलचल है। ऐसे आप

में भी अगर धर्म और राज्य - दोनों सत्ता नहीं हैं तो विघ्न आयेंगे, हलचल में लायेंगे, युद्ध करनी पड़ेगी। और दोनों ही सत्ता हैं तो सदा ही बेपरवाह बादशाह रहेंगे, कोई विघ्न आ नहीं सकता। तो ऐसे बेपरवाह बादशाह बने हो? या थोड़ी-थोड़ी शरीर की, सम्बन्ध की .... परवाह रहती है?

〰✧ पांडवों को कमाने की परवाह रहती है। परिवार को चलाने की परवाह रहती है या बेपरवाह रहते हैं? *चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बन कर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। 'मैं कर रहा हूँ' - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन 'बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ' - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे। कोई चिंता नहीं। कल क्या होगा - उसकी भी चिंता नहीं।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *सेकण्ड में एवररेडी बन सकते हो?* सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हो? कि युद्ध करनी पडेगी कि नहीं, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ ऐसे तो नहीं ना! *सोचा और हुआ।* सोचना और स्थित होना (बापदादा ने कुछ मिनटों तक ड्रिल कराई) अच्छा लगता है ना! तो सारे दिन में वीच-बीच में ये अभ्यास करो। कितने भी विजी हो लेकिन बीच-बीच में एक सेकण्ड भी अशरीरी होने का अभ्यास करो। डसके लिए कोई नहीं कह सकता - मैं बिजी हूँ।

〰✧ *एक सेकण्ड निकालना ही है, अभ्यास करना ही है।* अगर किसी से वातें भी कर रहे हो, किसके साथ कार्य कर रहे हो, तो उन्हों को भी एक सेकण्ड ये ड्रिल कराओ, क्योंकि समय प्रमाण ये अशरीरी-पन का अनुभव, यह अभ्यास जिसको ज्यादा होगा वो नम्वर आगे ले लेगा। क्योंकि सुनाया कि समय समाप्त अचानक होना है। *अशरीरी होने का अभ्यास होगा तो फौरन ही समय की समाप्ति का वायब्रेशन आयेगा।*

〰✧ इसलिए *अभी से अभ्यास वढाओ। ऐसे नहीं, अगले साल में डायमण्ड जुवली है तो अब नहीं करना है, पीछे करना है।* जितना बहुतकाल एड करेंगे उतना राज्य-भाग्य के प्राप्ति में भी नम्बर आगे लेंगे। *अगर बीच-बीच में यह अभ्यास करेंगे तो स्वत: ही शक्तिशाली स्थिति सहज अनुभव करेंगे।* ये छोटी-छोटी बातों में जो पुरुषार्थ करना पडता है वो सब सहज समाप्त हो जायेगा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे बाप के लिए कहा हुआ है कि वह जो है वैसा ही उनको जानने वाला सर्व प्राप्तियाँ कर सकता हैं वैसे ही स्वयं को जानने के लिए भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जान कर और मान कर सारा दिन चलते-फिरते हो?* क्योंकि जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है ऐसे ही

बाप द्वारा स्वयं को भी ऐसा जानना आवश्यक है। *जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ- ऐसे मान कर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी ? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फ़रिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत।* क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम अर्थात् नियम नीचे ऊपर नहीं हो सकता। संयम को जानना अर्थात् संयम में चलना। *स्वयं को मान कर के चलने वाले से स्वत: ही संयम साथ-साथ रहता है। उनको सोचना नहीं पड़ता कि यह संयम है वा नहीं, लेकिन स्वयं की स्थिति में स्थित होने वाला जो कर्म करता है, जो बोलता है, जो संकल्प करता है वही संयम बन जाता है।* जैसे साकार में स्वयं की स्मृति में रहने से जो कर्म किया वही ब्राह्मण परिवार का संयम हो गया ना? यह संयम कैसे बने? *ब्रह्मा द्वारा जो कुछ चला वही ब्राह्मण परिवार के लिए संयम बना। तो स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके समाने सदैव स्पष्ट रहती है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- दैवी फजीलत (मैनर्स) धारण कर आसुरी अवगुणों को छोड़कर पावन बनना"*

➳ ➳ *मैं आत्मा कस्तरी मग समान डस मायावी जंगल में भटक रही

थी... सच्ची सुख, शांति के लिए कहाँ-कहाँ भाग रही थी... अपने निज स्वरुप को भूल, निज गुणों को भूल, आसुरी अवगुणों को धारण कर दुखी हो गई थी... रावण के विकारों की लंका में जल रही थी...* परमधाम से प्रकाश का ज्योतिपुंज इस धरा पर आकर मुझ आत्मा की बुझी ज्योति को जगाया... दैवीय गुणों की सुगंध से मेरे मन की मृगतृष्णा को शांत किया... मैं आत्मा इस देह से न्यारी होती हुई उस ज्योतिपुंज मेरे प्यारे बाबा के पास पहुँच जाती हूँ...

❇ *"प्यारे बाबा ज्ञान के प्रकाश से मेरी आभा को प्रकाशित करते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वरीय यादे ही विकारो से मुक्त कराएंगी... *मीठे बाबा की मीठी यादे ही सच्चे सुख दामन में सजायेंगी... यह यादे ही आनन्द का दरिया जीवन में बहायेंगी...* और दैवी गुणो की धारणा सुखो भरे स्वर्ग को कदमो में उतार लाएंगी..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा पद्मापदम् भाग्यशाली अनुभव करती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में सच्चे सुख दैवी गुणो के श्रृंगार से सज कर निखरती जा रही हूँ... *साधारण मनुष्य से सुंदर देवता का भाग्य पा रही हूँ... और विकारो से मुक्त हो रही हूँ..."*

❇ *मीठा बाबा आसुरी अवगुणों के आवरण को हटाकर दैवीय गुणों से भरपूर करते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... देह के भान में आकर विकारो के दलदल में गहरे धँस गए थे... अब ईश्वरीय यादो से दुखो की कालिमा से सदा के लिए मुक्त हो जाओ... *दैवी गुणो को जाग्रत कर सुंदर देवताई स्वरूप से सज जाओ... और यादो से अथाह सुख और आनंद की दुनिया को गले लगाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा परमात्म आनंद के झूले में झूलती हुई कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा ईश्वरीय यादे ही सच्चे सुखो का आधार है... यह रोम रोम में बसाकर देवताई गुणो से भरती जा रही हूँ... *देह के भान से निकल कर ईश्वरीय यादो में महक रही हूँ... और उज्ज्वल भविष्य को पाती जा रही हूँ..."*

❇ *मेरे बाबा मेरा दिव्य श्रंगार कर पावन बनाते हुए कहते हैं:-* "प्यारे

सिकीलधे मीठे बच्चे... विकारो रुपी रावण ने सच्चे सुखो को ही छीन लिया और दुखो के गर्त में पहुंचाकर शक्तिहीन किया है... *अब अपनी देवताई सुंदरता को पुनः ईश्वरीय यादो से पाकर... दैवी गुणो की खूबसूरती से दमक उठो...* यह दैवी गुण ही स्वर्ग के सच्चे सुखो का आधार है..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा दैवीय गुणों से सज धज कर खूबसूरत परी बनकर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा सच्चे ज्ञान को पाकर देवताई गुण स्वयं में भरने की शक्ति... *मीठे बाबा की यादो से पाती जा रही हूँ... और विकारो से मुक्त होकर अपने सुन्दरतम स्वरूप को पा रही हूँ...* अपनी खोयी चमक को पुनः पा रही हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- काम की चोट कभी नही खानी है*"

➳ _ ➳ एकान्त में बैठ, अपने अनादि और आदि स्वरुप के बारे में मैं विचार करती हूँ कि जब मैं आत्मा अपने अनादि स्वरूप में अपने शिव पिता परमात्मा के साथ परमधाम में थी तो कितनी शुद्ध, पावन और सतोप्रधान थी। *यह सोचते - सोचते अपने अनादि ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित हो, मन बुद्धि के विमान पर बैठ मैं पहुँच जाती हूँ परमधाम और ज्ञान के दिव्य चक्षु से अपने वास्तविक स्वरूप को निहारने लगती हूँ*। देख रही हूँ मैं स्वयं को अति सुंदर, अति उज्ज्वल एक चमकती हुई ज्योति के रूप में जो एक चमकते हुए सितारे की भांति दिखाई दे रहा है। जिसमे से निकल रहा प्रकाश अनन्त किरणो के रूप में चारों और फैल रहा है। मेरा यह अनादि स्वरूप कितना सुंदर और प्यारा है।

➳ _ ➳ अपने इस अति सुंदर, सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप के साथ ही मैं आत्मा परमधाम से नीचे सष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने के लिए आती हूँ।

अपने शिव पिता परमात्मा द्वारा स्थापित अति सुंदर, देवी देवताओं की सम्पूर्ण सतोप्रधान दुनिया स्वर्ग में मैं सम्पूर्ण सतोप्रधान दैवी शरीर धारण कर अवतरित होती हूँ। देख रही हूँ अब मैं स्वयं को अपने अति सुंदर दैवी स्वरूप में सतयुगी दुनिया में। जहाँ सुख, शान्ति और सम्पन्नता भरपूर है। दुख का जहां कोई नाम निशान भी नही।

➳ _ ➳ स्वर्ग के अपरमअपार सुखों को भोगते हुए सतयुग और त्रेता युग में अपना सुंदर पार्ट बजा कर मैं आत्मा जब द्वापर युग मे प्रवेश करती हूँ तो दैहिक भान आने से विकारों की उत्पत्ति होनी शुरू हो जाती है। *इन विकारों में से भी मुख्य काम विकार की चोट मुझ आत्मा के उज्ज्वल स्वरूप को काला कर देती है। मेरी सुख, शान्ति, समृद्धि छीन कर मुझे दुखी और अशांत, पूज्य से पुजारी बना देती है*। किन्तु संगम युग पर मेरे शिव पिता परमात्मा आ कर, सत्य ज्ञान दे कर, पवित्रता की धारणा कराकर मुझे फिर से उसी सुख और शन्ति को पाने का मार्ग दिखाते हैं।

➳ _ ➳ यह विचार करते - करते मैं अब अपने संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ और अपने ब्राह्मण जीवन की महान उपलब्धियों को स्मृति में लाकर अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य का गुणगान करती हुई अपने शिव पिता की मीठी यादों में खो जाती हूँ। *मेरे शिव पिता की मीठी याद मेरे दिल को सुकून दे रही है और एक गहन शांत चित स्थिति में मुझे स्थित कर रही है*। इस शांत चित स्थिति में स्थित होते ही मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे मैं आत्मा इस साकारी देह से बिल्कुल डिटैच, अशरीरी हूँ।

➳ _ ➳ अशरीरीपन की स्थिति में स्थित होकर अब मैं एक सुंदर रूहानी यात्रा पर जा रही हूँ और इस यात्रा को पूरा करके मैं एक ऐसी दुनिया मे प्रवेश कर रही हूँ जहाँ चारों ओर जगमग करती हुई निराकारी आत्माएं ही आत्माएं दिखाई दे रही है। देह और देह से जुड़े किसी भी पदार्थ का यहां संकल्प मात्र भी नहीं। *एक बहुत ही न्यारी और प्यारी साक्षी स्थिति में स्थित हो कर मैं पवित्रता के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के समीप जा रही हूँ*। उनसे आ रही सातों गुणों की सतरंगी किरणों और सर्वशक्तियों को स्वयं में समाने के साथ - साथ योग अग्नि में अपने विकर्मों को भी दग्ध कर रही हूँ।

➳ _ ➳ *बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की ज्वाला स्वरूप किरणें जैसे - जैसे मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं वैसे - वैसे काम विकार के कारण मुझ आत्मा पर चढ़ी हुई मैल धुल रही है और मेरा स्वरूप फिर से सच्चे सोने के समान चमकदार हो रहा है*। सोने के समान शुद्ध बन कर अब मैं परमधाम से नीचे आ जाती हूँ और फिर से अपनी स्थूल देह में प्रवेश कर जाती हूँ।

➳ _ ➳ अपने इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में मैं सम्पूर्ण पवित्र रहूँगी इस प्रतिज्ञा के साथ अब मैं फिर से अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था को पाने का पुरुषार्थ निरन्तर कर रही हूँ। *काम की चोट से स्वयं को बचा कर, कदम - कदम पर सावधानी रखते हुए गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल पुष्प समान जीवन जीते हुए, अपनी पवित्र मनसा वृति से मैं औरों को भी पवित्रता के इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं मालिकपन की स्मृति से शक्तियों को आर्डर प्रमाण चलाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहकर हर कर्म करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव सफलता प्राप्त करती हूँ ।*
✺ *मैं त्रिकालदर्शी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ दुनिया वाले कहते हैं हाइएस्ट इन दी वर्ल्ड और वह भी एक जन्म के लिए लेकिन *आप बच्चे हाइएस्ट श्रेष्ठ इन दी कल्प हैं। सारे कल्प में आप श्रेष्ठ रहे हैं।* जानते हो ना? अपना अनादि काल देखो अनादि काल में भी आप सभी आत्मायें बाप के नजदीक रहने वाले हो। देख रहे हो, *अनादि रूप में बाप के साथ-साथ समीप रहने वाले श्रेष्ठ आत्मायें हो।* रहते सभी हैं लेकिन आपका स्थान बहुत समीप है। तो अनादि रूप में भी ऊंचे-ते-ऊंचे हो।

➳ _ ➳ फिर आओ *आदिकाल में सभी बच्चे देव-पदधारी देवता रूप में हो।* याद है अपना दैवी स्वरूप? आदिकाल में *सर्व प्राप्ति स्वरूप हो।* तन-मन-धन और जन चार ही स्वरूप में श्रेष्ठ हैं। सदा सम्पन्न हो, सर्व प्राप्ति स्वरूप हो। ऐसा देव-पद और किसी भी आत्माओं को प्राप्ति नहीं होता। चाहे धर्म आत्मायें हैं, महात्मायें हैं लेकिन ऐसा *सर्व प्राप्तियों में श्रेष्ठ, अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं, कोई भी अनुभव नहीं कर सकता।*

➳ _ ➳ फिर आओ मध्यकाल में, तो *मध्यकाल में भी आप आत्मायें पूज्य बनते हो। आपके जड़ चित्र पूजे जाते हैं।* कोई भी आत्माओं की ऐसे विधि-पर्वक पजा नहीं होती। जैसे पज्य आत्माओं की विधि-पर्वक पजा होती है तो

सोचो ऐसे विधि-पूर्वक और किसकी पूजा होती है! *हर कर्म की पूजा होती है क्योंकि कर्मयोगी बनते हो।* तो पूजा भी हर कर्म की होती है। चाहे धर्म आत्मायें या महान आत्माओं को साथ में मन्दिर में भी रखते हैं लेकिन विधि-पूर्वक पूजा नहीं होती। तो मध्यकाल में भी हाइएस्ट अर्थात् श्रेष्ठ हो।

➳ _ ➳ फिर आओ वर्तमान अन्तकाल में, तो *अन्तकाल में भी अब संगम पर श्रेष्ठ आत्मायें हो।* क्या श्रेष्ठता है? स्वयं बापदादा- परमात्म-आत्मा और आदि -आत्मा अर्थात् *बापदादा, दोनों द्वारा पालना भी लेते हो, पढ़ाई भी पढ़ते हो, साथ में सतगुरू द्वारा श्रीमत लेने के अधिकारी बने हो।*

➳ _ ➳ तो अनादिकाल, आदिकाल, मध्यमकाल और अब अन्तकाल में भी हाइएस्ट हो, श्रेष्ठ हो। इतना नशा रहता है? *बापदादा कहते हैं इस स्मृति को इमर्ज करो।* मन में, बुद्धि में इस प्राप्ति को दोहराओ। *जितना स्मृति को इमर्ज रखेंगे उतना स्मृति से रूहानी नशा होगा। खुशी होगी, शक्तिशाली बनेंगे।* इतना हाइएस्ट आत्मा बने हैं।

✺ *ड्रिल :- "तीनों कालों में हाइएस्ट श्रेष्ठ इन दी कल्प होने का अनुभव"*

➳ _ ➳ बापदादा की मधुर... अनमोल वाणियाँ पढ़ते हुए... मन व बुद्धि नशे में झूमने लग जाता है... मैं आत्मा बार-बार बलिहारी जाती हूँ... *इन वाणियों के माध्यम से... ईश्वर स्वयं मुझसे बात करते हैं... मुझे पढ़ाते हैं... इस पुरानी दुनिया में... जीवन का जीना आसान कर देते हैं...* मैं तेजस्वी मणि ज्योतिस्वरूप... बिंदुस्वरूप भृकुटी के मध्य में विराजमान हूँ... *त्रिकालदर्शीपन की स्थिति में स्थित होकर... दिव्य बुद्धि के यंत्र द्वारा... अपने तीनों कालों को देख रही हूँ...* हाईएस्ट... श्रेष्ठ इन द कल्प होने का अनुभव कर रही हूँ... एक सेकंड में ही अपने मूलवतन... परमधाम पहुंच जाती हूँ... अपने अनादिस्वरुप में... अनादिकाल को देख रही हूँ... सभी आत्माएं चमकती मणियाँ सी प्रतीत हो रहीं हैं... *मुझ आत्मा का स्थान बाबा के बहुत ही समीप है... मुक्त अवस्था... पूर्ण निर्संकल्पता... दिव्यता ही दिव्यता... मैं बीजरूप... बस बाबा को निहारती हुई... गहरी शांति में डूबी हुई...* स्वयं को बाबा के बहुत समीप अनुभव कर रही हूँ... कुछ देर इसी अवस्था में स्थित हो जाती हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा स्वयं को आदिकाल में... देवता स्वरुप में अनुभव कर रही हूँ... *संपूर्ण सुख शांति संपन्न... दिव्य व पवित्र देह की मालिक... मैं आत्मा सर्व प्राप्तियों में श्रेष्ठ... डबल ताजधारी... सोने के सिंहासन पर विराजमान हूँ...* मुझ आत्मा का दैवी स्वरूप सर्वगुण संपन्न... सोलह कला संपूर्ण है... तन मन धन से सदा संपन्न हूँ... यहाँ सभी जन भी निर्विकारी हैं... *चारों ओर संपूर्ण खुशहाली... समृद्धि...* अप्राप्ति का तो नाम निशान ही नहीं है... सोने के महल... पुष्पक विमान... *चहुं ओर देवी-देवता भ्रमण कर रहे हैं... सतोप्रधान प्रकृति का सौंदर्य...* सुगंधित पानी के झरने... ऐसे अद्भुत आनंद में... पशु पक्षी भी चहचहा रहे हैं... यह दृश्य देखते हुए... मैं आत्मा आनन्दविभोर हो रही हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा स्वयं के मध्यकाल को देख रही हूँ... अपने जड़ चित्र को मंदिरों में देख रही हूँ... *मैं अष्ट भुजा धारी दुर्गा हूँ... पापनाशिनी हूँ... असुर संहारिनी हूँ... जग उद्धारक हूँ...* भक्त लोग विधिपूर्वक... बहुत ही प्रेम से... मुझ आत्मा की जड़ चित्रों की पूजा कर रहे हैं... श्रेष्ठ कर्म की पूजा हो रही है... धर्मात्मा व महान आत्माओं के चित्र भी मंदिरों में साथ ही रखे हुए हैं... मुझ आत्मा की जड़ चित्रों से... *मेरे मस्तक से... शक्तिशाली किरणें निकलकर सभी पर पड़ रही हैं...* सभी का कल्याण कर रही हैं... सभी की मनोकामनाएं पूर्ण हो रही हैं...

➳ _ ➳ अब अंतकाल में इस वरदानी संगमयुग पर... स्वयं को श्रेष्ठ आत्मा अनुभव कर रही हूँ... *बापदादा मुझ ब्राह्मण आत्मा पर... ज्ञान रत्नों के... खुशियों के... शक्तियों के व सर्वगुणों के खजाने लुटा रहे हैं...* इन अखुट खज़ानों से खेलती... मुझ आत्मा के मुख से... *सदा रतन ही निकल रहे हैं... मन में सदैव ज्ञान का मनन चल रहा है...* इस महान समय में... मुझ संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा को... बापदादा की पालना का... श्रीमत लेने का... श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त हुआ है...

➳ _ ➳ त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित रहकर... मैं आत्मा अपने अनादिकाल... आदिकाल... मध्यमकाल तथा अंतकाल को देख रही हूँ...

हाईएस्ट... श्रेष्ठ इन द कल्प की अनुभूति करके... बहुत हर्षित हो रही हूँ... अति आनन्दित हो रही हूँ... सर्व प्राप्ति संपन्न... सदा स्मृति स्वरूप हूँ... बापदादा के नयनों का नूर हूँ... *श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति के रूहानी नशे में मस्त... मैं श्रेष्ठ आत्मा सदैव हर्षित... सर्वशक्तिसंपन्न अनुभव कर रही हूँ...* मास्टर सर्वशक्तिमान की स्मृति द्वारा... अंधकार को मिटाकर... विश्व को उज्जवल कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔